IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

रविन्द्रनाथ टैगोर के दार्शनिक चिंतन एवं वर्तमान संदर्भ में शिक्षा की प्रांसगिता

डॉ. ज्योति ताम्रकार
प्राचार्य, एस. वी. एन. कॉलेज, सिरोंजा, सागर, मध्यप्रदेश

परिचय-

मानव शुरु से ही चिन्तनशील प्राणी रहा है। ये चिंतन ही दर्शन का मूल है। कोई भी चिन्तन कितना ही प्राचीन क्यों न हो उसकी उपादेयता कभी समाप्त नहीं होती। शिक्षा और दार्शनिक चिंतन में अविच्छिन संबंध है। दर्शन हमारे जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करता है। शिक्षा उस लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है। रविन्द्रनाथ टैगोर आधुनिक युग के एक महान दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री थे। अपने मौलिक एवं नये विचारों के द्वारा भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपनी भारतीय संस्कृति के आधार पर ये केवल भारतीय शिक्षा की नींव ही नहीं डाली वरन पाश्चात्य शिक्षा में भी पूर्व एवं पश्चिम के आदर्शों को नये रूप में स्थापित किया। इनके इन्हीं महान कार्यों के कारण **गुरुदेव** (राष्ट्रपिता ने) की उपाधि से सम्मानित किया गया। इन्होंने अपने संदेश में शिक्षा को प्राकृतिक वातावरण में दिये जाने पर बल दिया। अतः ये प्रकृतिवादी शिक्षा के पक्षधर थे।

टैगोर ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रकृति को विशेष महत्व दिया है। इनका कहना था कि बालक को पुस्तक के स्थान पर जहा तक संभव हो सकें प्रत्यक्ष स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान किये जाने चाहिये। इन्होंने सर्वोच्च शिक्षा उसे कहा है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है। अध्ययन अध्यापन के लिये ये स्वतंत्र एवं प्राकृतिक वातावरण को उपयुक्त एवं श्रेष्ठ समझते थे। इसलिये इन्होंने 1901 में बोलपुर नामक स्थान पर शांति निकेतन नाम से एक विद्यालय की स्थापना की जो आज विश्वभारती विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। शांति निकेतन में ही रहकर इन्होंने गीतांजलि नामक रचना लिखी। जिस पर 1912 में इन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। टैगोर नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे। इनके अतिरिक्त इन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की, अनेकों देशों का भ्रमण किया तथा विभिन्न विश्वविद्यालय में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

व्याख्यान दिया, जिससे इनकी ख्याति में और भी अधिक वृद्धि हुई। टैगोर ने भारत के बौद्धिक, कलात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया। इनका व्यक्तित्व विलक्षण था।